भारत के 16 महाजनपदों का इतिहास

samanyagyan.com/hindi/gk-history-of-mahajanapadas

महाजनपद कौन थे?

महाजनपद भारत में बौद्ध धर्म के उदय से पहले सोलह राज्यों या कुलीन वर्गों के गणतंत्र थे जो प्राचीन भारत में छठी से चौथी शताब्दी ईसा पूर्व तक मौजूद थे। उनमें से दो संभवत गणतंत्र थे और अन्य में राजतंत्र के रूप थे। प्राचीन बौद्ध ग्रंथ जैसे अंगुठारा निकया सोलह महान राज्यों और गणराज्यों का बार-बार संदर्भ देते हैं जो भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्वी भाग से लेकर उत्तर-पश्चिम में अंगा तक फैले एक बेल्ट में विकसित हुए थे और इसमें ट्रांस के कुछ विंध्य हिस्सों को शामिल किया गया था।
छठी-पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व अक्सर भारतीय इतिहास में एक प्रमुख मोड़ माना जाता है; इसने सिंधु घाटी सभ्यता के निधन के बाद भारत के पहले बड़े शहरों के उदय के साथ-साथ श्रमण आंदोलनों (बौद्ध और जैन धर्म सहित) के उदय को देखा, जिसने वैदिक काल के धार्मिक रूढ़िवाद को चुनौती दी थी।

महाजनपद किसे कहते है?

महाजनपद की परिभाषा: प्राचीन भारत मे राज्य या प्रशासनिक इकाईयों को 'महाजनपद' कहते थे। उत्तर वैदिक काल में कुछ जनपदों का उल्लेख मिलता है। बौद्ध ग्रंथों में इनका कई बार उल्लेख हुआ है। बुद्ध के जन्म के पूर्व छठी शताब्दी ई. पूर्व में भारत 16 जनपदो में बंटा हुआ था।

जनपद शब्द का अर्थ:

"जनपद" शब्द का शाब्दिक अर्थ है, लोगों की तलहटी। यह तथ्य कि जनपद जन से उत्पन्न होता है, जो जन-जीवन के व्यवस्थित तरीके के लिए जन-जन के प्रारंभिक चरण में होता है। भूमि पर पहले निपटान की इस प्रक्रिया ने बुद्ध और पाणिनि के समय से पहले अपना अंतिम चरण पूरा कर लिया था। भारतीय उप-महाद्वीप के पूर्व-बौद्ध उत्तर-पश्चिम क्षेत्र को कई जनपदों में विभाजित किया गया था जो एक-दूसरे से सीमाओं से अलग थे। पाणिनि की "अष्टाध्यायी" में, जनपद देश के लिए और जनपद अपने नागरिकता के लिए खड़ा है। इनमें से प्रत्येक जनपद का नाम क्षत्रिय लोगों (या क्षत्रिय जन) के नाम पर रखा गया था, जो वहाँ बस गए थे। बौद्ध और अन्य ग्रंथ केवल संयोग से सोलह महान देशों (सोलसा महाजनपद) का उल्लेख करते हैं जो बुद्ध के समय से पहले अस्तित्व में थे। वे मगध के मामले को छोड़कर कोई जुड़ा इतिहास नहीं देते हैं।

महाजनपद की राजधानी:

हर एक महाजनपद की एक राजधानी थी जिसे क़िले से घेरा दिया जाता था। क़िलेबंद राजधानी की देखभाल, सेना और नौकरशाही के लिए भारी धन की ज़रूरत होती थी। सम्भवतः छठी शताब्दी ईसा पूर्व से ब्राह्मणों ने संस्कृत भाषा में धर्मशास्त्र ग्रंथों की रचना प्रारम्भ की। शासक किसानों, व्यापारियों और शिल्पकारों से कर तथा भेंट वसूल करते थे। संपत्ति जुटाने का एक उपाय पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण कर धन एकत्र करना भी था। कुछ राज्य अपनी स्थायी सेनाएँ और नौकरशाही तंत्र भी रखते थे और कुछ राज्य सहायक-सेना पर निर्भर करते थे जिन्हें कृषक वर्ग से नियुक्त किया जाता था।

महाजनपदों के विशिष्ट अभिलक्षण और विशेषताएँ:

बौद्ध तथा जैन के आरंभिक ग्रंथो में महाजनद के नाम से 16 राज्यों का उल्लेख मिलता है। समान्यत: इन महाजनपदों के नाम इन ग्रंथो में एक समान नहीं हैं, तो भी वज्जि, मगध, कोशल, कुरू, पांचाल, गंगाधर तथा अवन्ती आदि नाम एक जैसे हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि यह महाजनपद सबसे अधिक महत्वपूर्ण रहें होंगे।

1. अधिकांश महाजनपदों पर एक राजा का शासन होता था। परंतु गण और संघ के नाम से विख्यात राज्यों पर कई लोगों का समूह शासन करता था। इस समूह का प्रत्येक व्यक्ति राजा होता था। भगवान महावीर और भगवान बौद्ध इन्ही गणों से संबंधित थे। वज्जि संघ तथा कुछ अन्य राज्यों में भूमि सहित अनेक आर्थिक स्त्रोतों पर राजाओं का समूहिक नियंत्रण होता था।
2. प्रत्येक महाजनपद कि एक राजधानी होती थी जो हमेशा किले से घिरी होती थी। किलेबंद राजधानियों के रख-रखाव, प्रारंभी सेनाओं और नौकर शाही के लिए भारी आर्थिक साधनों कि आवश्यकता होती थी।
3. लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व से ब्राह्मणों ने संस्कृत में धर्मशास्त्र नामक ग्रंथ कि रचना शुरू की। इनमें शासन सहित अन्य सामाजिक वर्गों के लिए नियमों का निर्धारण किया गया। यह अपेक्षा की जाती की शासक क्षत्रिय वर्ग से ही होंगे।
4. शासको का काम किसानों, व्यापारियों और शिल्पकारों से कर तथा भेंट वसूल करना माना जाता था।
5. धन जुटाने के लिए पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण करना भी वैध माना जाता था।
6. धीरे-धीरे कुछ राज्यों ने अपनी स्थायी सेनाएँ और नौकरशाही तंत्र तैयार कर लिए। शेष राज्य अभी भी सहायक सेना पर निर्भर थे। सैनिक हमेशा कृषक वर्ग से भर्ती किए जाते थे।

भारत के 16 महाजनपद की राजधानी के नाम एवं क्षेत्र:

- **अवन्ति:** आधुनिक मालवा का प्रदेश जिसकी राजधानी उज्जयिनी और महिष्मति थी।
- **अश्मक या अस्सक:** दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद। नर्मदा और गोदावरी नदियों के बीच अवस्थित इस प्रदेश की राजधानी पाटन थी।
- **अंग:** वर्तमान के बिहार के मुंगेर और भागलपुर जिले। इनकी राजधानी चंपा थी।
- **कम्बोज:** पाकिस्तान का हजारा जिला।
- **काशी:** इसकी राजधानी वाराणसी थी। वर्तमान की वाराणसी व आसपास का क्षेत्र इसमें सम्मिलित रहा था।
- **कुरू:** आधुनिक हरियाणा तथा दिल्ली का यमुना नदी के पश्चिम वाला अंश शामिल था। इसकी राजधानी आधुनिक दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) थी।
- **कोशल:** उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिला, गोंडा और बहराइच के क्षेत्र शामिल थे। इसकी राजधानी श्रावस्ती थी।
- **गांधार:** पाकिस्तान का पश्चिमी तथा अफ़ग़ानिस्तान का पूर्वी क्षेत्र। इसे आधुनिक कंदहार से जोड़ने की गलती कई बार लोग कर देते हैं जो कि वास्तव में इस क्षेत्र से कुछ दक्षिण में स्थित था।
- **चेदि:** वर्तमान में बुंदेलखंड का इलाका।
- **वज्जि या वृजि':** यह आठ गणतांत्रिक कुलों का संघ था जो उत्तर बिहार में गंगा के उत्तर में अवस्थित था तथा जिसकी राजधानी वैशाली थी। इसमें आज के बिहार राज्य के दरभंगा, मधुबनी व मुजफ्फरपुर जिले सम्मिलित थे।
- **वत्स या वंश:** आधुनिक उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद तथा मिर्ज़ापुर जिले।
- **पांचाल:** पश्चिमी उत्तर प्रदेश। इसकी राजधानी अहिच्छत्र थी।
- **मगध:** दक्षिण बिहार में अवस्थित। शतपथ ब्राह्मण में इसे 'कीकट' कहा गया है। आधुनिक पटना तथा गया जिले और आसपास के क्षेत्र।

- **मत्स्य या मच्छ:** इसमें राजस्थान के अलवर, भरतपुर तथा जयपुर जिले के क्षेत्र शामिल थे।
- **मल्ल:** यह भी एक गणसंघ था और पूर्वी उत्तर प्रदेश के इलाके इसके क्षेत्र थे।
- **सुरसेन या शूरसेन:** इसकी राजधानी मथुरा थी।

भारत के 16 महाजनपद:

अंग: अंग प्राचीन भारत के 16 महाजनपदों में से एक था। इसका सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। बौद्ध ग्रंथो में अंग और वंग को प्रथम आर्यों की संज्ञा दी गई है। महाभारत के साक्ष्यों के अनुसार आधुनिक भागलपुर, मुंगेर और उससे सटे बिहार और बंगाल के क्षेत्र अंग प्रदेश के क्षेत्र थे। इस प्रदेश की राजधानी चम्पापुरी थी। यह जनपद मगध के अंतर्गत था। प्रारंभ में इस जनपद के राजाओं ने ब्रह्मदत्त के सहयोग से मगध के कुछ राजाओं को पराजित भी किया था किंतु कालांतर में इनकी शक्ति क्षीण हो गई और इन्हें मगध से पराजित होना पड़ा। महाभारत काल में यह कर्ण का राज्य था। इसका प्राचीन नाम मालिनी था। इसके प्रमुख नगर चम्पा (बंदरगाह), अश्वपुर थे। और इस महाजनपद का अंतिम राजा ब्रह्मदत्त था।

अश्मक या अस्सक: अश्मक या अस्सक प्राचीन भारत के 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व में 16 महाजनपदों में से एक था। जिसका उल्लेख बौद्ध ग्रंथ अंगुटारा निकया में किया गया है। यह एकमात्र महाजनपद था जो विंध्य पर्वत के दक्षिण में स्थित था। आधुनिक काल में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र के क्षेत्र शामिल हैं। यह अवन्ति का एक समीपवर्ती राज्य था। प्रारंभ में अस्सक गोदावरी के तट पर बसे हुए थे और पोतलि अथवा पोत इनकी राजधानी थी। जिसकी पहचान तेलंगाना में वर्तमान बोधन के रूप में की जाती है। अस्माक की पहचान बौद्ध साहित्य में असाका और अवाक के रूप में भी की जाती है और राजा हाला की गाथा सप्तशती थे।

अवन्ति: अवन्ति एक प्राचीन भारतीय महाजनपद (महान क्षेत्र) था, जो वर्तमान में मालवा क्षेत्र से संबंधित था। बौद्ध ग्रन्थ के अनुसार, अंगुत्तारा निकया, अवंती के (6 वीं शताब्दी) ईसा पूर्व के सोलह महान क्षेत्र महाजनपद में से एक था। इस जनपद को विंध्य द्वारा दो भागों में विभाजित किया गया था, उत्तरी भाग की राजधानी उज्जयिनी में थी और दक्षिणी भाग का महिष्मती केंद्र था। इस क्षेत्र से संबंधित प्राचीन लोगों को महाभारत के (उद्योग पर्व किताब) में महावला (ऐतिहासिक क्षेत्र) के रूप में वर्णित किया गया था। विष्णु पुराण, भागवत पुराण और ब्रह्म पुराण के अनुसार, अवंती, मालवा, सौराष्ट्र, अभिरस, सूरस, करुशासन से जुड़े थे और अरबुदास और पारियात्र (या परिपत्र) पहाड़ों (विंध्य की एक पश्चिमी शाखा) के किनारे स्थित थे। अवंति, शैशुनगा और नंदा मौर्य राजवंशों के शासन के दौरान मगध साम्राज्य का एक हिस्सा था।अवंती अवंतीराह साम्राज्य का पश्चिमी प्रांत बन गया, जिसकी राजधानी उज्जयिनी थी। रुद्रदामन (150 ईसा पूर्व) के जूनागढ़ रॉक शिलालेख में चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल के दौरान पश्चिमी प्रांत के राज्यपाल के रूप में पुष्यगुप्त का उल्लेख है। अगले शासक बिन्दुसार के शासनकाल के दौरान, राजकुमार अशोक प्रांतीय गवर्नर थे। मौर्यों के पतन के बाद, पुष्यमित्र शुंग के समय, उनके पुत्र अग्निमित्र विदिशा में मगध के वाइसराय थे, लेकिन उन्होंने सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए मगध से स्वतंत्र शासन किया था।

चेदि: चेदि, चेतिस या चेटिया की दो अलग-अलग बस्तियाँ थीं जिनमें से एक नेपाल की पहाड़ियों में और दूसरी कौशांबी के पास बुंदेलखंड में थी। पुराने अधिकारियों के अनुसार, चेदिस कौरवों और वत्स के राज्य के बीच यमुना के पास स्थित थे। मध्यदेव काल में चेदि के दक्षिणी सीमांत नर्मदा नदी के तट तक विस्तृत थे। महाभारत की सूक्ति या सुक्तिमती, चेदि की राजधानी थी। चेदि भारत के एक प्राचीन लोग थे बौद्ध ग्रंथों में जिन सोलह महाजनपदों

का उल्लेख है उनमें यह भी था। कलिचुरि वंश ने भी यहाँ राज्य किया। किसी समय शिशुपाल यहाँ का प्रसिद्ध राजा हुआ करता था। मध्य प्रदेश का ग्वालियर क्षेत्र में वर्तमान चंदेरी क़स्बा ही प्राचीन काल के चेदि राज्य की राजधानी बताया जाता है।

गांधार: गांधार प्राचीन भारत के 16 महाजनपदों में से एक था। इस प्रदेश का मुख्य केन्द्र आधुनिक पेशावर और आसपास के इलाके थे। इस महाजनपद के प्रमुख नगर थे पुरुषपुर (आधुनिक पेशावर) तथा तक्षशिला, जो इसकी राजधानी थी। इसका अस्तित्व 600 ईसा पूर्व से 11वीं सदी तक रहा। कुषाण शासकों के दौरान यहां बौद्ध धर्म बहुत फला फूला पर बाद में मुस्लिम आक्रमण के कारण इसका पतन हो गया। महाभारत काल में यहाँ के राजा शकुनि थे। धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी यहाँ की राजकुमारी थी जिसका नाम इसी के नाम पर पड़ा। तक्षशिला विश्वविद्यालय प्राचीन काल में शिक्षा का एक प्रसिद्ध केंद्र था, जहाँ दुनिया भर के विद्वान उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। पाणिनी, व्याकरण और कौटिल्य की भारतीय प्रतिभा तक्षशिला विश्वविद्यालय के विश्व प्रसिद्ध उत्पाद हैं। 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य में गांधार के राजा पुक्कसुति या पुष्करसरिन मगध के राजा बिंबिसार के समकालीन थे। गांधार भव्य उत्तरी ऊंची सड़क (उत्तरपथ) पर स्थित था और अंतर्राष्ट्रीय व्यावसायिक गतिविधियों का केंद्र था। विद्वानों के एक समूह के अनुसार, गंधार और कंबोज एक- दूसरे को पहचानते थे। यह भी कहा जाता है कि कौरवों, कंबोजों, गन्धर्वों और बाह्लिकों को लोग आपस में पहचानते थे।

कंबोज: कंबोज प्राचीन भारत के 16 महाजनपदों में से एक था। इसका उल्लेख पाणिनी के अष्टाध्यायी में 15 शक्तिशाली जनपदों में से एक के रूप में भी मिलता है। बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय, महावस्तु मे 16 महाजनपदों में भी कम्बोज का कई बार उल्लेख हुआ है, ये गांधारों के समीपवर्ती थे। इनमें कभी निकट संबंध भी रहा होगा, क्योंकि अनेक स्थानों पर गांधार और कांबोज का नाम साथ साथ आता है। इसका क्षेत्र आधुनिक उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान और अफगानिस्तान में मिलता है। राजपुर, द्वारका तथा कपिशि इनके प्रमुख नगर थे। इसका उल्लेख इरानी प्राचीन लेखों में भी मिलता है जिसमें इसे राजा कम्बीजेस के प्रदेश से जोड़ा जाता है। वाल्मीकि-रामायण में कंबोज, वाल्हीक और वनायु देशों को श्रेष्ठ घोड़ों के लिये उत्तम देश बताया है और महाभारत के अनुसार अर्जुन ने अपनी उत्तर दिशा की दिग्विजय-यात्रा के प्रसंग में दर्दरों या दर्दिस्तान के निवासियों के साथ ही कांबोजों को भी परास्त किया था, जिसके साथ ही महाभारत में कहा गया है कि कर्ण ने राजपुर पहुंचकर कांबोजों को जीता, जिससे राजपुर कंबोज का एक नगर सिद्ध होता है।

काशी: इसकी राजधानी बनारस या वाराणसी थी। यहाँ पार्श्वनाथ के पिता अश्वसेन प्रसिद्ध राजाओं में से एक हुए हैं यह राज्य अपनी राजधानी वाराणसी के आसपास के क्षेत्र में स्थित था, जो उत्तर और दक्षिण में वरुणा और असी नदियों से घिरा था जिसने वाराणसी को अपना नाम दिया। बुद्ध से पहले, काशी सोलह महाजनपदों में सबसे शक्तिशाली था। कई जातक कथाएँ भारत के अन्य शहरों की तुलना में इसकी राजधानी की श्रेष्ठता की गवाह हैं और इसकी समृद्धि और संपन्नता के बारे में बात करते हैं। ये कहानियां काशी और कोसला, अंग और मगध के तीन राज्यों के बीच वर्चस्व के लिए लंबे संघर्ष के बारे में बताती हैं। यद्यपि काशी के राजा बृहद्रथ ने कोसल पर विजय प्राप्त की, पर बाद में बुद्ध के समय काशी को राजा कंस द्वारा कोसल में शामिल कर लिया गया। कोशल और विदेह के साथ काशी वैदिक ग्रंथों में उल्लेखित हैं और प्रतीत होता है कि वे एक करीबी सहयोगी थे। मत्स्य पुराण और अलबरूनी ने काशी को क्रमशः कोशिका और कौशल्या के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

कोशल: कोशल प्राचीन भारत के 16 महाजनपदों में से एक था। इसका क्षेत्र आधुनिक गोरखपुर के पास था। इसकी राजधानी श्रावस्ती थी। चौथी सदी ईसा पूर्व में मगध ने इस पर अपना अधिकार कर लिया। गोंडा के समीप सेठ-मेठ में आज भी इसके टूटी फूटी वस्तु के

टुकड़े मिलते हैं। कंस भी यहाँ का शासक रहा जिसका संघर्ष निरंतर काशी से होता रहा और अंत में कंस ने काशी को अपने आधीन कर लिया। और चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में यह यहां का प्रमुख नगर हुआ करता था इसके दक्षिणी क्षेत्र में गंगा नदी, इसके पूर्व में गंडक (नारायणी) और उत्तर सीमा में हिमालय पर्वत थे। इसका उल्लेख वैदिक धर्म के केंद्र के रूप में मिलता है। इसके राजाओं ने देवता के साथ दैत्य, रक्षा और असुरों के खिलाफ विभिन्न युद्धों में गठबंधन किया। कोशल और अयोध्या हिंदू शास्त्रों, इतिहस और पुराण में एक केंद्रीय स्थान रखते हैं। रघुवंश-इक्ष्वाकुवंश सबसे लंबा निरंतर राजवंश था इस राजवंश में भगवान राम एक राजा थे। अन्य महान राजा पृथु, हरिश्चंद्र और दिलीप थे, जिनका उल्लेख विभिन्न पुराणों, रामायण और महाभारत में मिलता है। इन ग्रंथों के अनुसार, कोशल इतिहास में अब तक का सबसे शक्तिशाली और सबसे बड़ा राज्य था। बाद में, महावीर और बुद्ध के युग के दौरान प्रसिद्ध राजा प्रसेनजीत द्वारा राज्य का शासन किया गया, उसके बाद उनके पुत्र विदुभ (विरुधका) ने शासन किया था। अयोध्या, साकेत, बनारस और श्रावस्ती कोशल के प्रमुख शहर थे।

कुरू: पुराणों में पुरू-भरत परिवार से कौरवों की उत्पत्ति का पता लगाया गया है। कुरु का जन्म पुरु के वंश की 25 पीढ़ियों के बाद हुआ था, और कुरु, कौरवों और पांडवों की 15 पीढ़ियों के बाद पैदा हुआ था। ऐतरेय ब्राह्मण मध्यदेश में कौरवों का पता लगाता है और उत्तराखंड को हिमालय से परे रहने के रूप में भी संदर्भित करता है। बौद्ध ग्रन्थ सुमंगविलासिनी के अनुसार, कुरुराष्ट्र (कौरवों) के लोग उत्तराखंड से आए थे। वायु पुराण में कहा गया है कि पुरु वंश के संवत्सर के पुत्र कुरु कुरुक्षेत्र के कुरु और कुरुराष्ट्र के संस्थापक (कुरु जनपद) के पूर्वज थे। कौरवों का देश मोटे तौर पर आधुनिक थानेसर, दिल्ली राज्य और उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले से मेल खाता था। जातक के अनुसार, कौरवों की राजधानी आधुनिक दिल्ली के पास इंद्रप्रस्थ (इंद्रपट्ट) थी, जिसने कई अन्य लीगों का विस्तार किया। बुद्ध के समय, कुरु देश पर कोरय्या नामक एक चतुर्भुज सरदार (राजा कांसुल) का शासन था।

मगध: मगध प्राचीन भारत के 16 महाजनपदों में से एक था। आधुनिक पटना तथा गया जिला इसमें शामिल थे। इसकी राजधानी गिरिव्रज (वर्तमान राजगीर) पटलिपुत्र थी। भगवान बुद्ध के पूर्व बृहद्रथ तथा जरासंध यहाँ के प्रतिष्ठित राजा थे। अभी इस नाम से बिहार में एक प्रंमडल है जिसे "मगध प्रमंडल" के रूप मेँ जाना जाता है। मगध का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्व वेद में मिलता है। अभियान चिन्तामणि के अनुसार मगध को 'कीकट' कहा गया है। मगध बुद्धकालीन समय में एक शक्तिशाली राजतन्त्रों में एक था। यह दक्षिणी बिहार में स्थित था जो कालान्तर में उत्तर भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद बन गया। यह गौरवमयी इतिहास और राजनीतिक एवं धार्मिकता का विश्व केन्द्र बन गया। मगध महाजनपद की सीमा उत्तर में गंगा से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक, पूर्व में चम्पा से पश्चिम में सोन नदी तक विस्तृत थीं। मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह थी। यह पाँच पहाड़ियों से घिरा नगर था। कालान्तर में मगध की राजधानी पाटलिपुत्र में स्थापित हुई। मगध राज्य में तत्कालीन शक्तिशाली राज्य कौशल, वत्स व अवन्ति को अपने जनपद में मिला लिया। इस प्रकार मगध का विस्तार अखण्ड भारत के रूप में हो गया और प्राचीन मगध का इतिहास ही भारत का इतिहास बना।

मल्ल: मल्ल प्राचीन भारत के 16 महाजनपदों में से एक था। इसका उल्लेख अंगुत्तर निकाय में आया है। 'मल्ल' नाम 'मल्ल राजवंश' के नाम पर है जो इस महाजनपद की उस समय शासक था। मल्लों की दो शाखाएँ थीं। एक की राजधानी कुशीनारा थी जो वर्तमान कुशीनगर है तथा दूसरे की राजधानी पावा थी जो वर्तमान फाजिलनगर है। बौद्धों और जैन कृतियों में मल्ल का अक्सर उल्लेख किया गया है। वे उत्तरी दक्षिण एशिया में रहने वाले एक शक्तिशाली व्यक्ति थे। भगवान बुद्ध और भगवान महावीर के काल से बौद्ध धर्म और जैन धर्म के इतिहास में कुशीनारा और पावा बहुत महत्वपूर्ण हैं, 24 वें तीर्थंकर ने अपना अंतिम भोजन

क्रमशः कुशीनारा और पावा (पावापुरी) में लिया। बुद्ध पावा में बीमार हो गए और कुशीनारा में उनकी मृत्यु हो गई, जबकि भगवान महावीर ने अपना निर्वाण पावापुरी में लिया। यह व्यापक रूप से माना जाता है कि भगवान गौतम की मृत्यु कुशीनगर के राजा सस्तिपाल मॉल के प्रांगण में हुई थी। कुशीनगर अब बौद्ध तीर्थ चक्र का केंद्र है जिसे उत्तर प्रदेश के पर्यटन विकास निगम द्वारा विकसित किया जा रहा है।

मत्स्य या मच्छ: वैदिक युग के दौरान मत्स्य साम्राज्य सोलसा (सोलह) महाजनपद (महान राज्य) में से एक था, जैसा कि हिंदू महाकाव्य महाभारत और छठे ईसा पूर्व बौद्ध ग्रंथ अंगुटारा निकया में वर्णित है। मत्स्य या मच्छ गोत्र का देश यमुना के कौरवों के दक्षिण और पश्चिम में था, जिसने उन्हें पांचालों से अलग कर दिया। यह मोटे तौर पर राजस्थान के जयपुर राज्य के अनुरूप था, और भरतपुर के कुछ हिस्सों के साथ पूरे अलवर को शामिल किया गया था। मत्स्य की राजधानी विराटनगर (आधुनिक बैराट) में थी, जिसके बारे में कहा जाता है कि इसका नाम इसके संस्थापक राजा विराट के नाम पर रखा गया था। पाली साहित्य में, मत्स्यसेन आमतौर पर सुरसेन से जुड़े होते हैं। पश्चिमी मत्स्य चंबल के उत्तरी तट पर पहाड़ी पथ था। मत्स्यगाम क्षेत्र में बाद के दिनों में मत्स्य की एक शाखा भी पाई जाती है। बुद्ध के समय मत्स्यियों का अपना राजनीतिक महत्व नहीं था। राजा सुजाता ने चेडिस और मत्स्य दोनों पर शासन किया, इस प्रकार यह दिखाते हुए कि मत्स्य ने एक बार चेदि साम्राज्य का एक हिस्सा बनाया था।

पांचाल: पांचाल या पान्चाल राज्य प्राचीन भारत के 16 महाजनपदों में से एक था। यह उत्तर में हिमालय के भाभर क्षेत्र से लेकर दक्षिण में चर्मनवती नदी के उत्तरी तट के बीच के मैदानों में फैला हुआ था। इसके पश्चिमी क्षेत्र में कुरु, मत्स्य तथा सुरसेन राज्य थे और पूर्व में नैमिषारण्य था। बाद में यह दो भागों में बाँटा गया। उत्तर पांचाल हिमालय से लेकर गंगा के उत्तरी तट तक था तथा उसकी राजधानी अहिछत्र थी तथा दक्षिण पांचाल गंगा के दक्षिणी तट से लेकर चर्मनवती तक था और उसकी राजधानी काम्पिल्य थी। अखण्ड पांचाल की सत्ता पाण्डवों के ससुर तथा द्रौपदी के पिता द्रुपद के पास थी। कहा जाता है कि पहले द्रुपद तथा पाण्डवों और कौरवों के गुरु द्रोणाचार्य के बीच घनिष्ट मित्रता थी लेकिन कुछ कारणवश दोनों में मन-मुटाव हो गया। फलतः दोनों के बीच युद्ध छिड़ गया। युद्ध में द्रुपद की हार हुयी और पांचाल का विभाजन हुआ। उत्तर पांचाल के राजा द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा मनोनीत हुये तथा द्रुपद को दक्षिण पांचाल से ही संतोष करना पड़ा। दोनों राज्यों को गंगा अलग करती थी।

सुरसेन या शूरसेन: सूरसेन का देश मत्स्य के पूर्व में और यमुना के पश्चिम में स्थित था। इसकी राजधानी मथुरा थी। सुरसेना के राजा अवंतिपुत्र, बुद्ध के प्रमुख शिष्यों में से थे, जिनकी मदद से मथुरा देश में बौद्ध धर्म को आधार मिला। मथुरा, सुरसेना के अंधक और वृष्णियों का उल्लेख पाणिनी की अष्टाध्यायी में किया गया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में, वृष्णियों को संगा या गणतंत्र के रूप में वर्णित किया गया है। यादवों के वृष्णि, अंधक और अन्य संबद्ध जनजातियों ने एक संग और वासुदेव (कृष्ण) को संग-मुख कहा है। सुरासेना की राजधानी मथुरा को मेगस्थनीज के समय में कृष्ण उपासना के केंद्र के रूप में भी जाना जाता था। सुरासेना साम्राज्य ने मगध साम्राज्य द्वारा अपनी स्वतंत्रता खो दी थी।

वज्जि या वृजि: वज्जि या व्रजजी पञ्चाचारियों और प्राचीन भारत के 16 प्रमुख महाजनपदों में से एक सहित पड़ोसी कुलों की एक संघी थी। यह आठ गणतांत्रिक कुलों का संघ था जो उत्तर बिहार में गंगा के उत्तर में अवस्थित था तथा जिसकी राजधानी वैशाली थी। इसमें आज के बिहार राज्य के दरभंगा, मधुबनी व मुजफ्फरपुर जिले सम्मिलित थे।उन्होंने जिस क्षेत्र पर शासन किया, वह उत्तरी बिहार के मिथिला का क्षेत्र है। बौद्ध ग्रन्थ अंगदत्त निकया और जैन पाठ भगवती सूत्र दोनों ने वज्जि को अपने सोलह महाजनपदों की सूची में शामिल किया। इस

महाजनपद का नाम इसके सत्तारूढ़ कुलों में से एक विज्जी से लिया गया था। वज्जि राज्य को गणतंत्र होने का संकेत दिया गया है। इस गोत्र का उल्लेख पाणिनि, चाणक्य और जुआनज़ैंग द्वारा भी किया गया है।

वत्स या वंश: वत्स या वंश प्राचीन भारत के 16 महाजनपदों में से एक था। यह आधुनिक इलाहाबाद के आसपास केन्द्रित था। उत्तरपूर्व में यमुना की तटवर्ती भूमि इसमें सम्मिलित थी। इलाहाबाद से 30 मील दूर कौशाम्बी (वर्तमान कोसम) इसकी राजधानी थी, जो इलाहाबाद से 38 मील दक्षिणपश्चिम यमुना पर स्थित थी। वत्स को वत्स देश और वत्स भूमि भी कहा गया है। महाभारत के युद्ध में वत्स लोग पांडवों के पक्ष से लड़े थे। 6 वीं शताब्दी में उदयन वत्स का शासक था। वह बहुत शक्तिशाली, युद्धप्रिय और शिकार का शौकीन था। प्रारंभ में राजा उदयन बौद्ध धर्म के विरोधी थे, लेकिन बाद में बुद्ध के अनुयायी बन गए और बौद्ध धर्म को राजकीय धर्म बना दिया। उदयन की माता, रानी मृगावती, भारतीय इतिहास की सबसे प्रारंभिक ज्ञात महिला शासकों में से एक हैं।

सबसे शक्तिशाली साम्राज्य मगध का उदय:

छठी शताब्दी ई॰ पू॰ के मध्य सोलह बड़े राज्यों के महाजनपदों का अस्तित्व समाप्त हो चुका था और जब मगध के शासक उत्तरी भारत में सम्पूर्ण साम्राज्य स्थापित करने के लिए लगातार प्रयत्न कर रहे थे। उस समय यहाँ पर 4 प्रबल राजतंत्रों का शासन था – मगध, कौशल, अवन्ती और वत्स। बीते समय में मगध ने इन तीनों राजतंत्रों पर अधिकार करके एक विशाल एवं मजबूत साम्राज्य की स्थापना की।

वैदिक साहित्य में मगध को अपावन देश कहा गया है। इस साम्राज्य की स्थापना बृहद्रथ ने की थी जो जरासंध का पिता व वसु चैध- उपरिचर का पुत्र था। बृहद्रथ ने ही बृहद्रथ वंश की नीव डाली थी। इस वंश मे ब्रहद्रथ का पुत्र जरासंध एक पराक्रमी शासक हुआ है महाभारत में उसके शौर्य और शक्ति का विस्तृत रूप से वर्णन मिलता है। बृहद्रथ का वंश छठी शताब्दी ई॰पू॰ मे समाप्त हो गया था, क्योंकि उस शताब्दी में जब गौतम बुद्ध ने अपने उपदेश दिये थे तब मगध पर पुरानों के अनुसार 'शिशुनाग' वंश का शासक राजा 'बिम्बिसार' राज्य करता था। परंतु बौद्ध साहित्य में उस समय मगध पर 'हर्यक वंश' का शासन बताया गया है और बिम्बिसार इस कुल से संबंध रखता था।

मगध का विस्तार करने वाले प्रमुख शासक व वंश:

हर्यक वंश

- **बिम्बिसार** – हर्यक वंश का सर्वप्रथम राजा बिम्बिसार था। यह भाटिया नामक एक साधारण सामन्त का पुत्र था और 15 वर्ष की आयु में 544 ई॰पू॰ में इनका राज्याभिषेक हुआ। बिम्बिसार को पुराणों के अनुसार श्रेणिक नाम से भी जाना जाता है बिम्बिसार ने तीन विवहा किए थे, कौशल राजा प्रसेनजित की बहन कौशल देवी से, लिच्छवि राजा चेतक की कन्या चेलना से, और मद्र नरेश की पुत्री क्षेमा से। इसने अंग (मुंगेर और भागलपुर) के राजा ब्रम्हदत्त को हराया। बिम्बिसार बौद्ध धर्म का अनुयायी था उसने राजगृह का निर्माण करा कर उसे राजधानी राजधानी बनाया। इस नगर का योजनाकार महागोविन्द था। बिम्बिसार की मृत्यु 492 ई॰ मे उसके पुत्र आजतशत्रु द्वारा हत्या करने हुई थी। बुद्धघोष के अनुसार बिम्बिसार के साम्राज्य में 80 हजार गांव थे तथा और उनका विस्तार 900 मील से अधिक था। बिम्बिसार ने बेलुवन नामक उद्दान बुद्ध तथा संघ के निमित्त प्रदान किए थे।

- **अजातशत्रु** – अजातशत्रु 492 ई.पू. में मगध की गद्दी पर बैठा था। पितृहन्ता के कारण अजातशत्रु का दूसरा नाम कुणिक पड़ा था। इसने गौतम बुद्ध के चचेरे भाई देवदत्त के कहने पर अपने पिता की हत्या की थी। अजातशत्रु का विवाह कोशल नरेश राजा प्रसेनजित की पुत्री वाजीरा के साथ हुआ। उसने अपने दो योग्य मंत्री सुनील और वस्सकार को लिच्छवि राजाओं में फुट पैदा करने का कार्य भार सौंपा इसके बाद वैशाली के लिच्छवि राजाओं के साथ युद्ध हुआ जिसमें अजातशत्रु की विजय हुई। इसमें अजातशत्रु ने लिच्छवियों के विरुद्ध युद्ध में महाशिलाकंटक तथा रथमूसल नामक दो शस्त्रों का प्रथम बार प्रयोग किया। यह पहले जैन धर्म से प्रभावित था परंतु बाद में बौद्ध धर्म को मानने लगा। इसने राजग्रह में विशाल सपूत का निर्माण कराया था। अजातशत्रु की हत्या उसके पुत्र उदायिन ने 461 ई॰पू॰ में की थी।
- **उदायिन** – उदायिन जैन धर्म का अनुयायी था उसने गंगा और सोन नदीयों के संगम पर पटलिपुत्र नामक नगर की स्थापना की बौद्ध ग्रंथो में उदायिन को पितृहन्ता कहा जाता है। जैन ग्रन्थों में उदायिन को पितृभक्त बताया गया है। हर्यक वंश का अंतिम शासक नागदशक था।

शिशुनाग वंश

- **शिशुनाग** – नागदशक की हत्या उसके अमात्य शिशुनाग ने की थी। इसके बाद उसने शिशुनाग वंश की स्थापना 412 ई॰पू॰ में की थी। यह बड़ा ही वीर तथा साहसी सम्राट सिद्ध हुआ। सिहांसन पर बैठते ही इसने अवन्ती राज्य पर आक्रमण कर जीत हासिल की। इसके बाद वत्स राज्य और कौशल राज्य पर भी अपना अधिकार स्थापित कर लिया। शिशुनाग ने अपनी राजधानी वैशाली में बनाई। अठारह वर्ष तक सफलतापूर्वक शासन करने के बाद उसका देहांत हो गया।
- **कालाशोक** – शिशुनाग के बाद उसका पुत्र कालकोश मगध की गद्दी पर बैठा। उसने अपनी राजधानी पटलिपुत्र में बनाई। कालाशोक के शासनकाल में द्वितय बौद्ध संगीति का आयोजन वैशाली में हुआ। शिशुनाग वंश का अंतिम शासक नन्दीवर्धन था।

नन्द वंश

- **महापद्म नन्द** – नन्दीवर्धन की मृत्यु के बाद उसके पुत्र महापद्म नन्द ने नन्द वंश की स्थापना की (पुराण एवं जैन साहित्य के अनुसार यह पहला गैर क्षत्रिय राजा था) महापद्म नन्द को एकराट, सर्वक्षत्रान्तक अर्थात क्षत्रियों का नाश करने वाला भी कहा जाता है। परंतु इसने द्वितय परशुराम की उपाधि धरण की थी। इसने कलिंग को जीता तथा विद्रोही कोसल राज्य का दमन किया पुराणों के अनुसार उसने 28 वर्ष तक राज्य किया था।
- **धनानन्द** – धनानन्द नन्द वंश का अंतिम शासक था। भट्टशाल धनानन्द का सेनापति शकटार और राक्षस क्रमश उसके अमात्य थे। नन्द वंश सर्वाधिक धनी राज्य एवं विशाल सेना के लिए प्रख्यात था। सिकंदर का समकालीन शासक धनानन्द था। नन्द वंश का विनाश चन्द्रगुप्त मौर्य। एवं चाणक्य ने किया था। नन्द वंश पहले के कुछेक गैर क्षत्रिय राजवंशों में से एक था। नन्दों को भारत के पहले साम्राज्य निर्माताओं की संज्ञा मिली है। इसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य वंश की स्थापन की थी।

You just read: 16 Mahaajanapadon Ka Itihaas